ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–३६
दिनांक– शुक्रवार, १२ मई, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 38.8 एवं 18.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 69 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 22 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.6 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 7.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 10.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 25.6 एवं दोपहर में 38.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13–17 मई, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 13–17 मई, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखें जा सकते हैं। अगले 3–4 दिनों तक आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है। 17 मई के आसपास मौसम में बदलाव आने की सम्भावना है जिसके कारण एक–दो स्थानों पर बूंदा बूंदी की सम्भावना बन सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में अधिकतम तापमान 39–41 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 22–26 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 14 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। हलाकि 13 मई को पूर्वा हवा भी चल सकती है।

• समसामयिक सुझाव

- मौसम के शुष्क एवं लगातार तापमान में वृद्धि को देखते हुए किसान भाई गर्मी वाली सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल तथा गरमा मक्का के खेतो में आवश्यकतानुसार सिचाई करें जिससे खेतो में नमी बरकरार रहें तथा इसका कुप्रभाव फसलों पर न पड़े।
- जिन किसान भाई का खेत खाली है तथा वे खरीफ धान की नर्सरी समय से लगाना चाहते है वैसे किसान भाई खेत की तैयारी शुरू कर दें। स्वस्थ पौध के लिए र्नसरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800–1000 बर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौड़ाई 1.25–1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधा अनुसार रखें। बीज की व्यवस्था प्रमाणित स्त्रोत से करें। देर से पकने वाली किस्मों की नर्सरी 25 मई से लगा सकते है।
- खरीफ मक्का की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 10 से 15 टन गोबर की सड़ी खाद प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। खरीफ मक्का की बुआई 25 मई से करें। हरी खाद के लिए सनई और ढ़ैचा की बुआई करें।
- किसान भाई रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सुर्य की तेज धूप मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, प्युपा एवं घास के बीजों को नष्ट हो जाये। खरीफ धान की र्नसरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौध के लिए र्नसरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करे।
- अदरक बुवाई करने का समय आ गया है अतः किसान भाई अदरक की बुआई 15 मई से शुरू करें। अदरक की मरान एवं नदिया किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुषंसित है। खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 30 से 40 किलोग्राम, स्फूर 50 किलोग्राम, पोटास 80 से 100 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 20 से 25 किलोग्राम एवं बोरेक्स 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। अदरक के लिए बीज दर 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार 20–30 ग्राम जिसमें 3 से 4 स्वस्थ कलियाँ हो। रोपाई की दुरी 30X20 से0मी0 रखे। अच्छे उपज के लिए रीडोमिल दवा के 0.2 प्रतिषत घोल से उपचारित बीज की बुआई करें।
- हल्दी की बुआई 15 मई से शुरू करें। हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुषंसित है। खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 60 से 75 किलोग्राम, स्फूर 50 से 60 किलोग्राम, पोटास 100 से 120 किलोग्राम एवं जिंक सल्फेट 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। हल्दी के लिए बीज दर 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार 30–35 ग्राम जिसमें 4 से 5 स्वस्थ कलियाँ हो। रोपाई की दुरी 30X20 से0मी0 तथा गहराई 5 से 6 से0मी0 रखे। अच्छे उपज के लिए 2.5 ग्राम दाईथेन एम0 45 + 0.1 प्रतिशत कारवेन्डाजीम प्रति किलोग्राम बीज की दर से घोल बनाकर उसमें आधा घंटे तक उपचारित करने के बाद बुआई करे।
- कीट एवं रोग–व्याधि मूंग एवं उरद् में नियमित रुप से निगरानी करें। इन फसलों में सफेद मक्खी (एक रस चुसक कीट) के द्वारा प्रसारित होने वाला एक विनाषकारी रोग पीला मोजैक विषाणु रोग है। इसके शुरूवाती लक्षण पत्तियों पर पीले धब्बे के रूप दिखाई देता है, बाद में पत्तियॉ तथा फलियॉ पूर्ण रूप से पीली हो जाती है। इन पत्तियों पर उत्तक क्षय भी देखा जाता है। फलन काफी प्रभावित होता है। उपचार हेतु रोग ग्रसित पौधों को शुरू में ही उखाड़ कर नष्ट कर दें तथा इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस0 एल0/0-3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिंडी की खड़ी फसल पर जैसीड एवं बोरर का प्रकोप होने पर नीम आधारित दवाएँ जैसे नीमीगोल्ड, नीमीसाईड का प्रयोग 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में मिलाकर करें।

आज का अधिकतम तापमानः 37.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 18.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)